हिन्दी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श

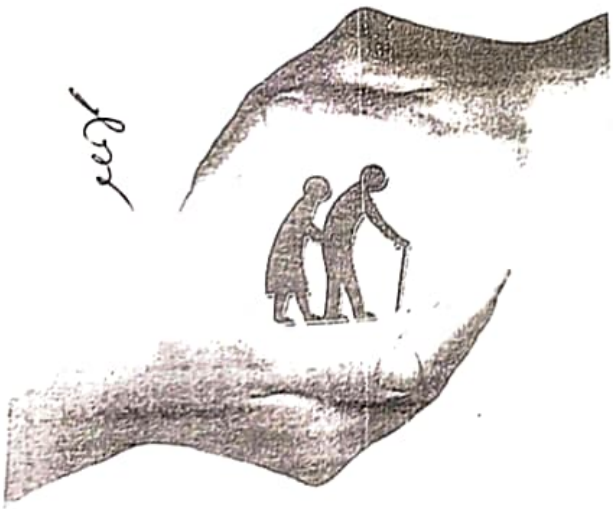

संपादक : डॉ. दिलीप मेहरा

ISBN - 978-81-950501-8-5

पुस्तक : हिन्दी कथा-साहित्य में वृद्ध विमर्श
संपादक : © डॉ. दिलीप मेहरा
प्रकाशक : उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
A-685 आवास विकास, हंसपुरम्, कानपुर -208 021 (उ.प्र.)
Email : utkarshpublisherskanpur@gmail.com
Mob. : 8707662869, 9554837752
संस्करण : प्रथम, 2021
मूल्य : 1195/-
आवरण सज्जा : तबारक अली, पटकापुर, कानपुर
शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : सार्थक डिजिटिल, कानपुर

Hindi Katha Sahitya Mein Vriddha Vimarsh
by : Dr. Dilip Mehra
Price : One thousand One hundred ninty five only.

29. हिन्दी कहानी साहित्य में दस्तक देता वृद्ध विमर्श
डॉ. दीपिका परमार 244
30. प्रेमचंद की कहानियों में वृद्ध सरोकार
डॉ. राजेन्द्र परमार 251
31. हिंदी कहानियों में संध्या बेला की त्रासदी
डॉ. हिरल शादीजा 258
32. पिता : घर की चौखट पर बिखरते सपनें
डॉ. रमेश चंद मीणा 263
33. पर्त-दर-पर्त खुलती वृद्ध संवेदना: सूर्यबाला की कहानियाँ
प्रो. रंजना अरगडे 276
34. वृद्धविमर्श और मृदुला गर्ग की कहानियाँ
डॉ. अनु पांडेय 287
35. पीढ़ियों का द्वंद्वात्मक सम्बन्ध और चित्रा मुद्गल
हिरन दूबे 293
36. हिंदी कहानियों में झलकता वृद्धों का दर्द
डॉ. नीतू परिहार 298
37. भीष्म साहनी की कहानियाँ : वृद्ध विमर्श के आइने में
डॉ. अनु मेहता 303
38. डॉ. दिलीप मेहरा की कहानियों में वृद्ध विमर्श
वाघेला प्रियंका नारणभाई 309
39. इक्कीसवीं सदी की कहानियों में वृद्धावस्था का सरोकार
शालिनी चौहान 318
40. इक्कीसवीं सदी की कहानियों में वृद्ध विमर्श : 'वाङ्मय' पत्रिका की कहानियों के परिप्रेक्ष्य में
डॉ. संगीता चौहान 326
41. धन्यकुमार बिराजदार की कहानियों में वृद्ध विमर्श
डॉ. स्मिता खंडप्पा सिताफले 336
42. राजस्थान के हिंदी कहानी लेखन में वृद्ध विमर्श
डॉ. सुरेश सिंह राठौड़ 340
43. प्रवासी कथाकार सुषम बेदी की कहानियों में अभिव्यक्त वृद्ध स्त्री-जीवन की त्रासदी
अर्चना गुप्ता 353
44. हिन्दी कहानियों में वृद्ध विमर्श : 'वापसी' के संदर्भ में
डॉ. प्रीति भट्ट 363

हिंदी कहानियों में झलकता वृद्धों का दर्द

डॉ. नीतू परिहार

उत्तरआधुनिक समय में विभिन्न विमर्शों पर चर्चा होती रहती है। हाशिये घटना है। प्रत्येक पर पड़े समुदायों जैसे स्त्री, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक आदि पर बहुत लिखा जा रहा है। इसी तरह अब वृद्धी पर भी ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। उसी के परिणामस्वरूप वृद्ध-विमर्श उभरकर आया है। वृद्धावस्था एक धीरे धीरे आने वाली अवस्था है जो कि स्वाभाविक और प्राकृतिक व्यक्ति को इस पड़ाव से गुजरना होता है। यह सही है कि बुढ़ापा जीवन की प्रत्येक उत्पाद्य शक्ति सोख लेता हैं। परिवार में वृद्ध / वृद्धाओं की अवमूलियत • स्थिति का चित्रण अनेक सदर्भों में मिलता है। वृद्धों की जायदाद हड़प लेना, उन्हें ठीक से भोजन न देना, घर की सबसे छोटी कोठरी में बंद रखना, उनसे किसी को मिलने न देना और तो और वृद्धों के साथ मारपीट करना बहुत आम है। जो व्यक्ति एक समय में परिवार के केन्द्र में होता है वही धीरे-धीरे बढ़ती उम्र के साथ केन्द्र से परिधि में आ जाता है। घर में उसका मान-सम्मान कम हो जाता है। उसे केन्द्र से हाशिये पर धकेल दिया जाता है।

हिन्दी साहित्य में कई ऐसी कहानियाँ और उपन्यास हैं जो वृद्ध जीवन पर केन्द्रित हैं। जिसमें प्रमुख हैं- प्रेमचंद की 'बूढ़ी काकी', उषा प्रियंवदा की 'वापसी,' ज्ञानरंजन की 'पिता' आदि कहानियाँ तथा उपन्यासों में चित्रा मुद्गल का 'गिलिगडु, निर्मल वर्मा 'अन्तिम अरण्य' आदि। यहाँ दो कहानियाँ भीष्म सहानी की 'चीफ की दावत' तथा यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र' की 'जनक की पीड़ा पर बात की जा रही है।

भीष्म साहनी हिंदी साहित्य के प्रगतिशील लेखकों में जाना-पहचाना नाम है। उन्होंने अपने साहित्यिक लेखन में कई कहानियाँ और एकांकी आदि लिख कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। वे अपनी कहानियों के माध्यम से मानव-जीवन की भीषण त्रासदियों और कुरूपताओं को हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। उनकी 'चीफ की दावत' कहानी मध्यवर्गीय व्यक्ति की अवसरवादिता. स्वार्थपरता तथा उसकी महत्वाकांक्षा को उजागर करती है।

'चीफ की दावत' कहानी उस मध्यवर्गीय परिवार की कहानी है, जहाँ पैसा और पद जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। मिस्टर शामनाथ जिसे माँ ने अपने गहने बेचकर पढ़ाया, नौकरी लगाया, उसी के लिए 'माँ' अब घर में अवांछित के समान है। चीफ को खुश करने के लिए घर में दावत रखी गई है। सारे घर में फेरबदल किया जा रहा है, ताकि घर सुन्दर दिखे।

वस्तु "कुर्सियाँ मेज, तिपाइयाँ, नैपकिन, फूल-सब बरामदे में पहुँच गए । ड्रिंक का इन्तजाम बैठक में कर दिया गया। अब घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे और पलंग के नीचे छुपाया जाने लगा।" सामान छुपा देने के बाद शामनाथ को याद आता है कि एक और है जिसे छुपाना है। वह सोचने लगता है माँ के बारे में। उसी माँ को छुपाना है जो अपने बेटे के लिए पल-पल जीती-मरती रही। यह वही माँ है जो खुद गीले में सोकर बच्चों को सूखे में तुलाती रही। खुद आधा पेट भोजन कर बच्चों को थालीभर देती रही।